INDEX

NAME.....STD.....SEC.....Roll No.....

Sr. No.	Date	Topic	Page No.	Teacher's Sign. Remarks
01		EPC : Meaning & Important	01-04	
02		पठन कौशल का अधिगठण	05-07	
03		वैश्विक और स्थानीय भाषा की समझ तथा ग्लोबल भाषा का ज्ञान	08-11	
04		वर्णात्मक अध्ययन	12	
05		कथा	13	
06		वार्तालाप	14	
07		जीवनी आलेख	15	
08		नाटक	16	
09		कविता	17	
10		पत्र	18	
11		पटकथा	19	
12		रिपोर्ट	20	
13		समाचार वाचक	21	
14		पूर्व पठन और उत्तरपठन की प्रक्रिया	22-23	
15		पठन लेखन कौशल का विकास	24-25	
16		सहयोगात्मक लेखन	26-27	
17		पाठ का चिन्तन और आलोचनात्मक चिन्तन	28-29	

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

EPC means

E ⇒ ENHANCE, P ⇒ PROFESSIONAL

C ⇒ CAPACITIES

* भूमिका →

वर्तमान समय में शिक्षण प्रक्रिया में कठोर परिवर्तन हुए हैं। अब अध्यापक के कर्तव्यों तथा उनकी अध्यापक कार्य और भूमिका में भी विस्तृत सीमा में परिवर्तन हुए हैं। सभी विद्यालय सब बहुत बड़े दबाव में आ गया है। उनका प्रमुख लक्ष्य सभी विद्यार्थियों और अन्य से उत्तम परिणाम प्राप्त करना है।

* व्यावसायिक योग्ताएँ वृद्धि →

EPC एक अध्यापक के लिए बहुत महत्तवपूर्ण है। क्योंकि सभी अध्यापकों का कर्तव्य है, अच्छे विद्यार्थियों का निर्माण करे। ताकि समाज का विकास हो सके, यह मुख्यत: सभी प्रकार के कौशलों के अध्यापक की ओर संकेत है।

* यह सभी अध्यापकों की आवश्यक योग्यता के

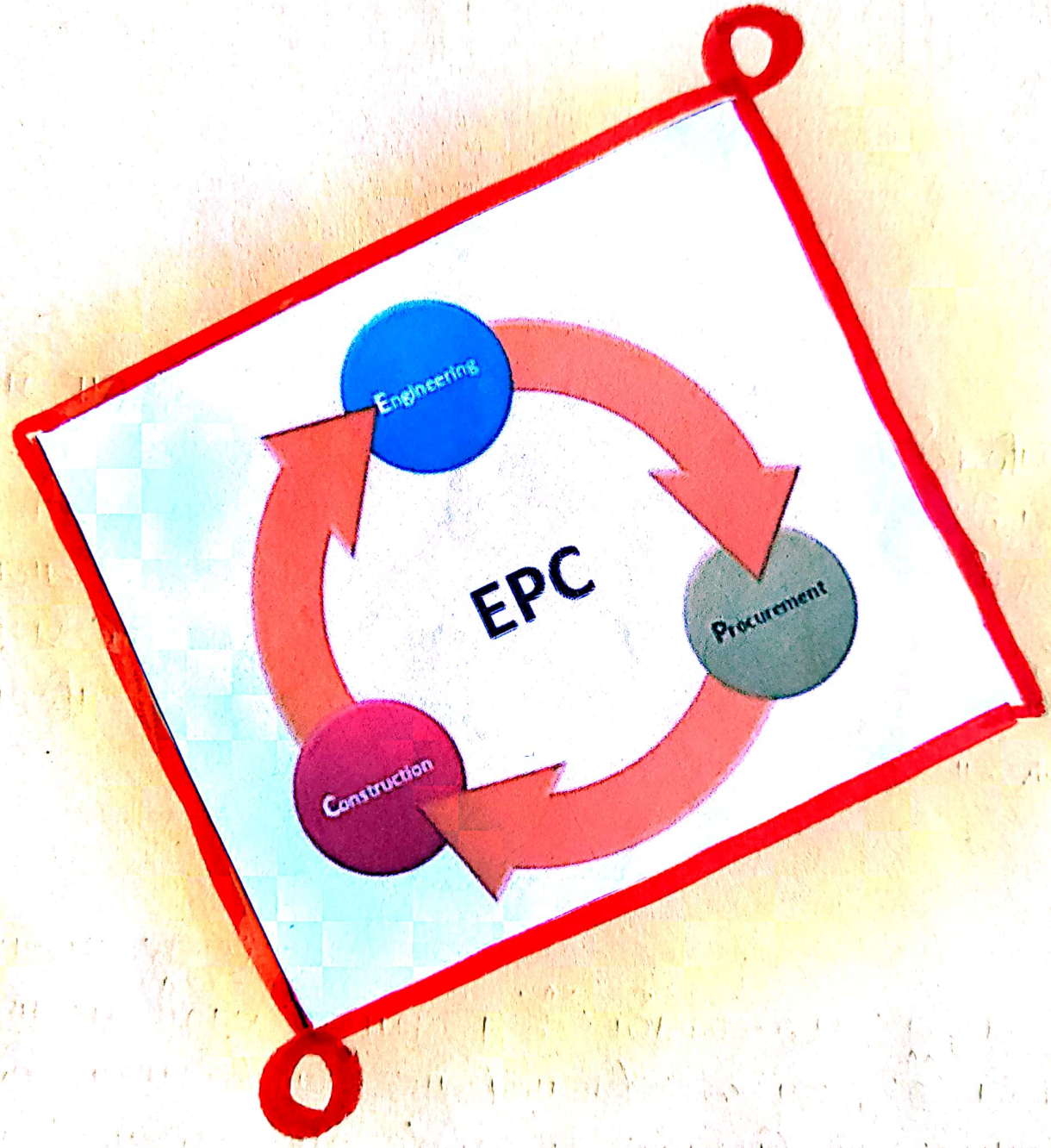

Scanned with CamScanner

अनुसार अपने व्यवसाय Profession को Teaching में निपुण व कुशल बनाने की एक प्रक्रिया है। यहां योग्यता (capacities) से है। जो एक अध्यापक के लिए अनिवार्य है।

EPC → तात्पर्य है कि EPC एक अध्यापन प्रक्रिया है। यह अध्यापन में सम्मिलित ऐसा विषय है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने व्यवसाय में वृद्धि करे हैं।

* योग्यता से अभिप्राय है - व्यवसाय में अपना सर्वश्रेष्ठ कार्य प्रदर्शन से है।

* अतः EPC अध्यापन कार्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसके साथ - साथ प्रत्येक छात्र - अध्यापक कार्य के प्रत्येक छात्र अध्यापन की छोटी से बड़ी बात सीख सकेंगे, ताकि वह Teaching Profession में सफलता प्राप्त कर सकें।

*** EPC के महत्व को निम्न कथनों के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :-**

1.) **अनुकूलता में वृद्धि →** कोई भी मनुष्य परिवर्तनों के अनुसार अनुकूल जीवन जीए बिना नहीं रह

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

सकता । उसे नित होने वाले समाज मे परिवर्तन के अनुसार अपने आपको ढालना पड़ता है । और इसके लिए आवश्यक है कि वे अपनी योग्यताओं, कौशलो कुशलताओं में वृद्धि करे । इसलिए EPC एक मूल्य महत्वपूर्ण विषय है । शिक्षण व अधिगम प्रक्रिया मे सम्मिलित है ।

2.) स्वयं के बारे में अध्ययन → किसी भी कार्य को स्वयं करने से हमें अपने बारे मे आत्म ज्ञान हो जाता है । इससे उनमें अपनी योग्यताओं का पता चलता है । इससे उनमें डर व झिझक भी दुर हो जाती है । जो समाज के लिए भी आवश्यक है ।

3.) सत्यता को विकसित → यह आवश्यक है कि हमें अपने योग्यताओं, कमियों व कठोर परिश्रम के बारे मे सत्य का पता चलता है । यह दुसरो के बारे मे सत्यता का प्रमाण देता है । इसके द्वारा हम दूसरों की योग्यताओं और कमियों की भी देख सकते है । अतः समय के साथ-साथ बहुत महत्वपूर्ण है । सत्य का जीवन मे भी बहुत ही प्रभाव पड़ता है ।

* हमें सर्वदा सत्य बोलना चाहिए, क्योंकि झूठ बोलने

Scanned with CamScanner

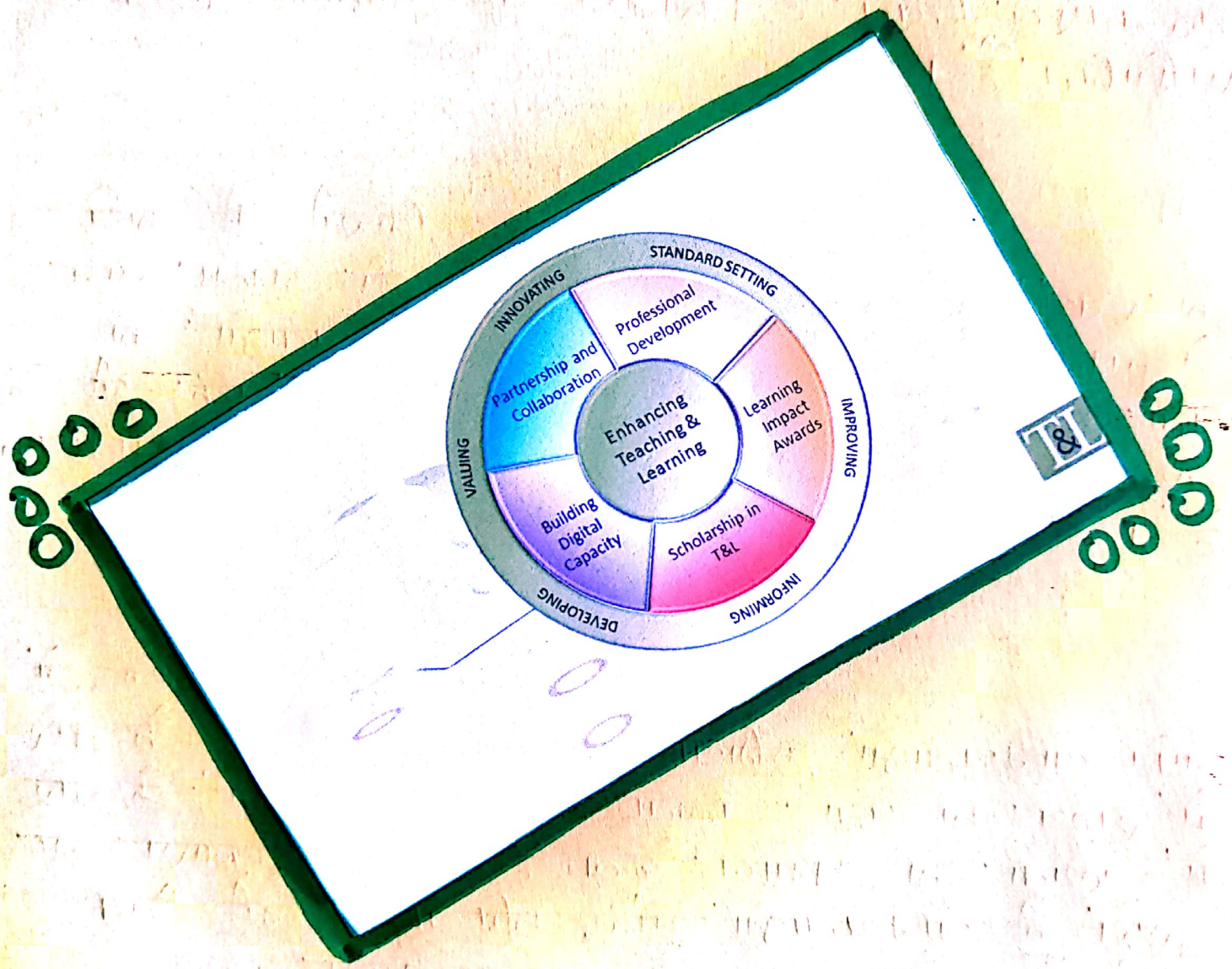

Scanned with CamScanner

से बाद में बहुत सारी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। अतः हमेशा सत्यता को विकसित करना चाहिए।

4.) ज्ञान में वृद्धि →

व्यावसायिक योग्यता ज्ञान प्राप्ति में सहायक है। इसके द्वारा हमें अपने व्यवसाय के संबंध में नई-नई जानकारियों व ज्ञान प्राप्त कर सकते है। जो किसी भी व्यवसाय में भी अति आवश्यक है।

5.) विकास में वृद्धि →

EPC के द्वारा हम किसी भी कठिनाई जो हमारे व्यावसायिक विकास में बाधक होने का निवारण कर सकते है। व्यावसायिक योग्यता हमें कठिनाइयों से बाहर निकालने में आवश्यक भूमिका निभाती है।

अतः EPC व्यावसायिक योग्यता वृद्धि अध्ययन प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

Scanned with CamScanner

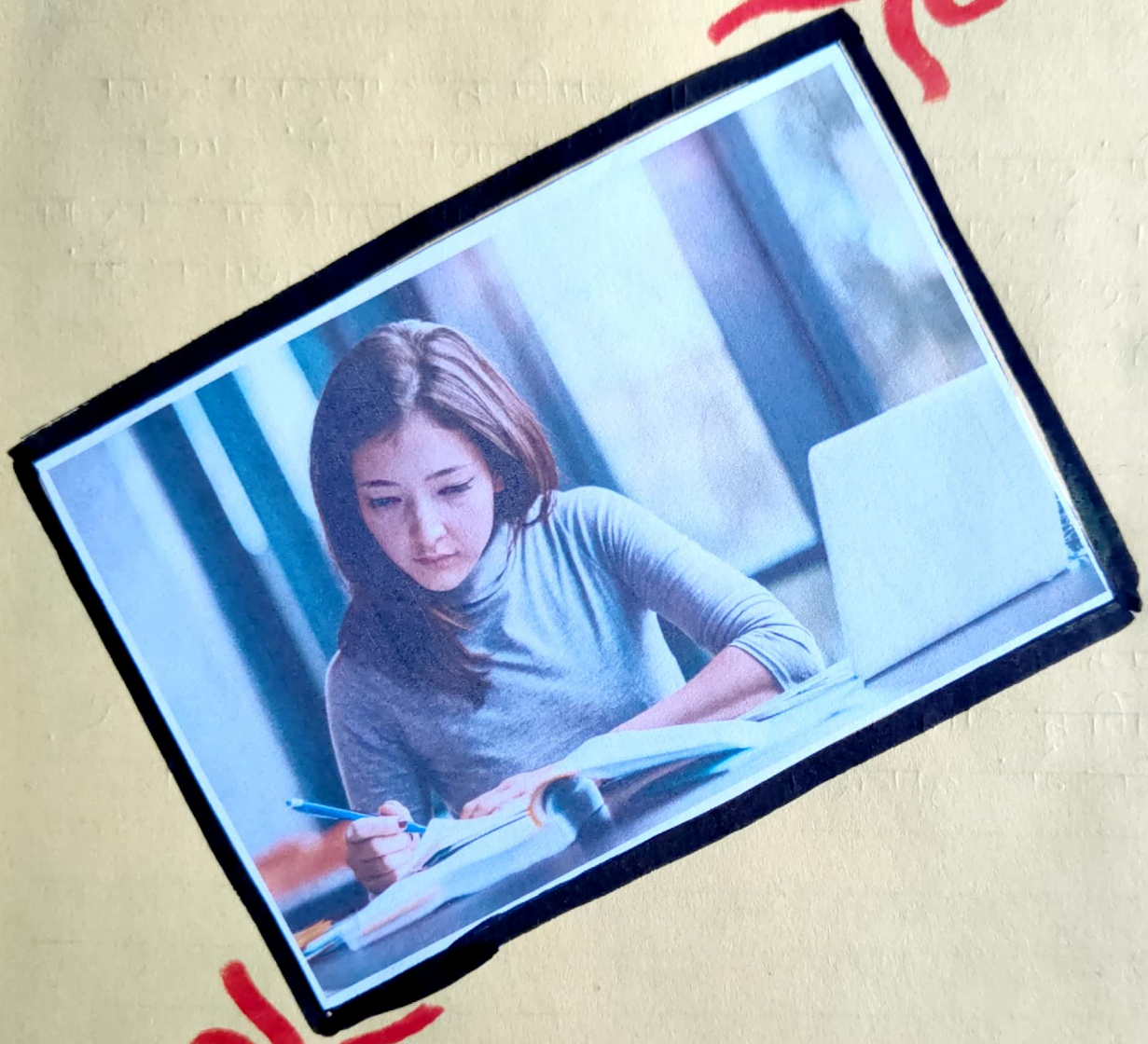

Scanned with CamScanner

पठन भाषाई कौशल के रूप
पठन कौशल का अधिग्रहण

कार्य को करने की विशेष योग्यता कौशल कहलाती हैं। किसी कार्य में निपुण होने की योग्यता कौशल कहलाती है। भाषा की योग्यता का विकास भाषाई कौशल के विकास से संबंधित हैं।

* **भाषाई संप्रेषण के प्रकार** → भाषाई संप्रेषण दो प्रकार का होता हैं।

(1.) मौखिक (2.) लिखित।

* **डॉ शिखा चतुर्वेदी के अनुसार** "भाषा की निपुणता लिखित व मौखिक दो रूपों में होती हैं, उन्ही पर निर्भर करती हैं।"

* **वी. रोजगोपालन के अनुसार** "भाषा शिक्षण को स्पष्ट करते हुए करते है कि अन्य भाषा शिक्षण में यह आवश्यक कि पहले भाषा के मुख्य कौशल श्रवण व भाषण सिखाया जाए।

पठन से अभिप्राय

भाषा की लिपि को पहचान कर उच्चारित करना है। साथ ही अर्थ ग्रहण करना भी है। पठन का संबंध भाषाविद् मनो वैज्ञानिक पक्ष से जोड़ते है।

Scanned with CamScanner

शारीरिक पक्ष में भी इसी कारण भाषा अधिग्रहण में पठन सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

*** लाॅंग मैन डिक्शनरी आफ एप्लाइड लिंग्विस्टिक के अनुसार** " पठन कौशल किसी लिखित पाठ्यवस्तु का कुछ इस प्रकार में प्रत्यक्षीकरण करना है कि इसकी सामग्री का अवबोध हो सके "।

पठन प्रक्रिया के सोपान

पठन प्रक्रिया के चार सोपान होते हैं :-

1. **पहचान** → 1.) लिपि को पहचानना।
2.) लिपि को संकेतों व सांकेतिक ध्वनियों से जोड़ना।
3.) ध्वनि संकेतों से मणित शब्द या वाक्यों को पहचानना।

2. **अर्थग्रहण** → 1.) लिपि संकेतों द्वारा निर्मित शब्दों वाक्यों में निहित अर्थ को पहचानना।
2.) अर्थ को संदर्भानुसार समझना।
3.) विभिन्न प्रकार के अर्थों का ग्रहण करना, कोशीय - अर्थ, व्याकरणिक - अर्थ, वाक्यगत - अर्थ, सांस्कृतिक - अर्थ आदि।

3. **मूल्यांकन** → यह उच्चरित सोपान है। पठन

Scanned with CamScanner

ग्रहण किए गए विचारों की उपयोगिता सार्थकता, विश्वसनीयता विचार या मूल्यांकन करता है।

5. **अनुप्रयोग** → 1.) अंतिम सोपान।
2.) पठन कौशल का उद्देश्य पूर्ण होना।

स्वर के प्रकार

स्वर पठन → वाणी, दृष्टि, जिह्वा का प्रयोग।

↑

पठन

↓

मौन पठन → बिना बोले दृष्टि के प्रयोग के साथ पढ़ना।

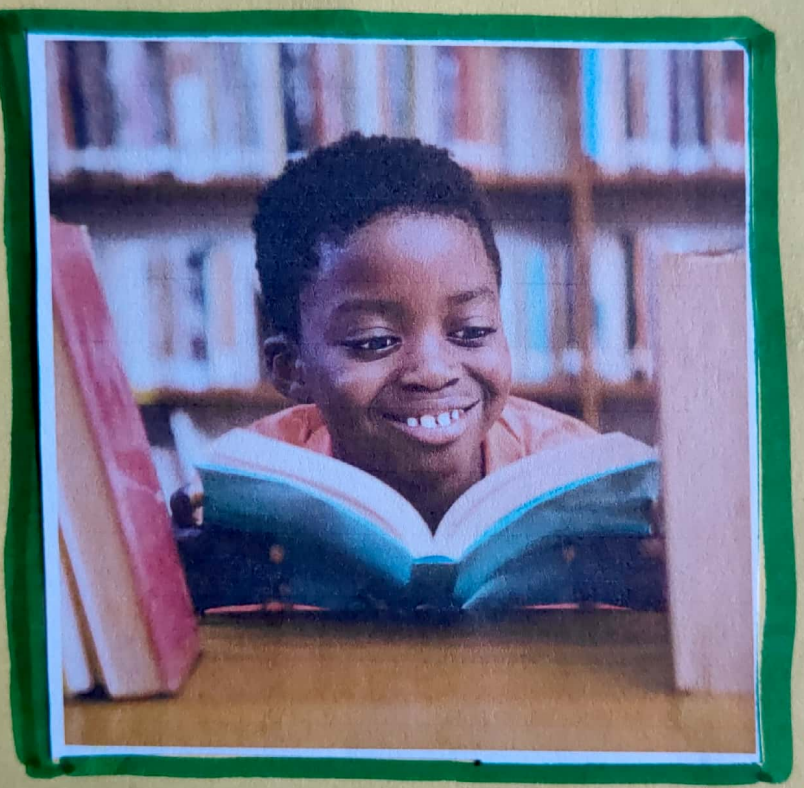

Scanned with CamScanner

वैश्विक और स्थानीय समझ हेतु पढ़ना

वर्तमान समय में विश्व तेजी से भूमंडलीकरण की ओर बढ़ रहा है। बालक का भाषाई ज्ञान मात्र मातृभाषा और स्थानीय भाषा तक सीमित ही नहीं रह सकता। इसलिए बालक को स्थानीय या ग्लोबल सहित भाषा की समझ हेतु स्थानीय भाषा के ज्ञान की आवश्यकता है।

* स्थानीय भाषा का ज्ञान :-

1.) स्थान विशेष पर बातचीत व चर्चा हेतु।
2.) प्राथमिक शिक्षा हेतु।
3.) परिवार द्वारा बोले जाने वाली भाषा का ज्ञान।
4.) स्थानीय मनोरंजन प्राप्त करने के लिए।
5.) संस्कृति के ज्ञान हेतु।
6.) स्थानीय मनोरंजन प्राप्त करने के लिए।
7.) स्थानीय पत्रिका, स्थानीय समाचार पत्र आदि के कठिन कथन हेतु।
8.) दुनियादारी की समझ का विकास।

* ग्लोबल भाषा का ज्ञान :-

भाषा की सीमा होती है। भाषा एक निश्चित दायरे में बोली जाती है। जो भाषा एक से अधिक देशों या अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर बोली जाती है, ग्लोब भाषा का रूप ले लेती है। यह स्थानीय या मूल लोगों द्वारा प्रयोग की जाती है। वैश्विक भाषा एक आम भाषा है। जिसका प्रयोग अनेक देश आपसी संबंधी शिक्षा व्यापार व

Scanned with CamScanner

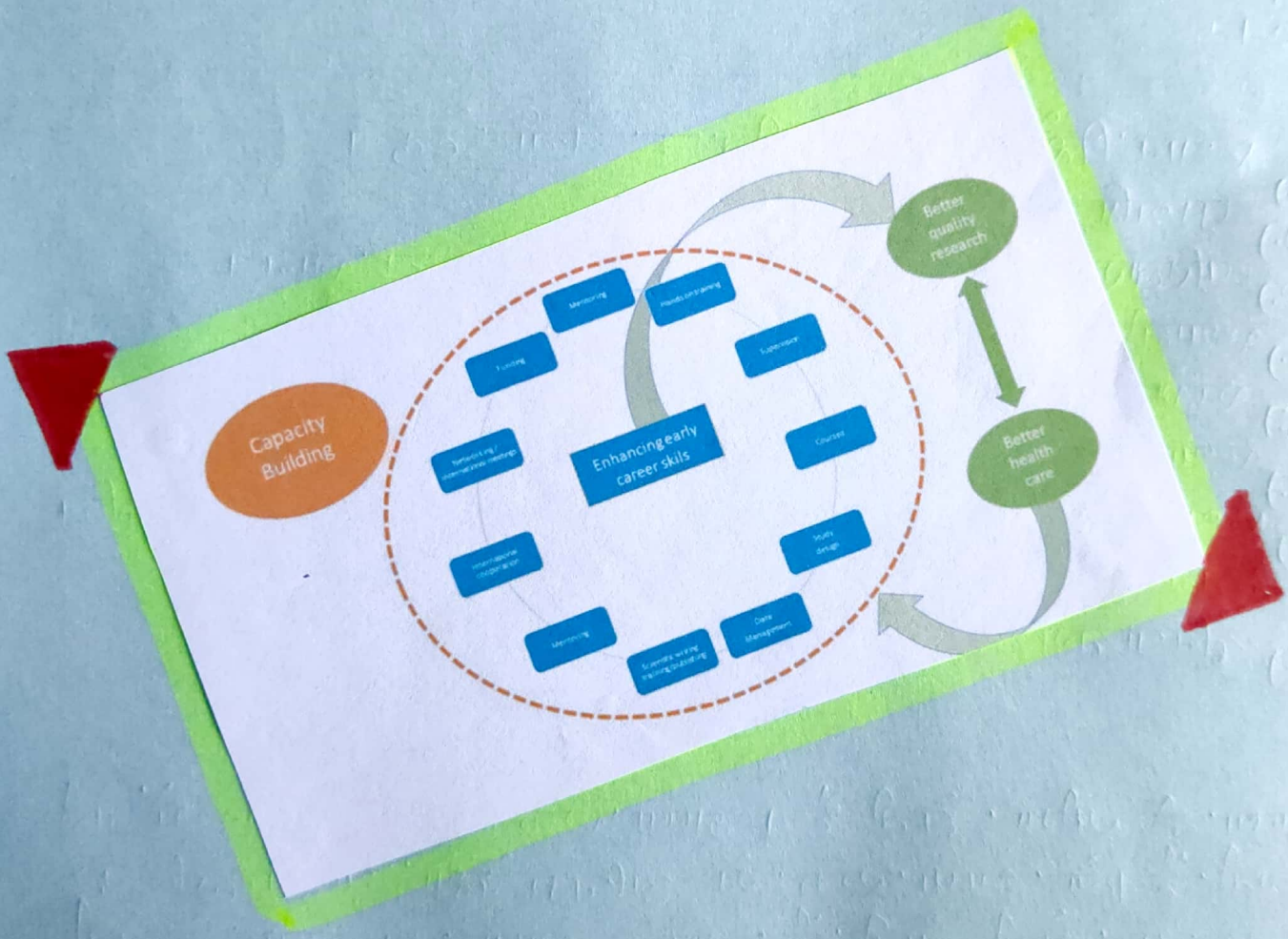

Scanned with CamScanner

भाईचारे के लिए करते है। वास्तव में दुनिया के सर्वाधिक देशों पर शासन करने वाली भाषा ही वैश्विक भाषा कहलाती है, यही कारण है कि अंग्रेजो ने आज वैश्विक भाषा का स्थान ले लिया है।

वैश्विक भाषा की आवश्यकता

1.) अंतरराष्ट्रीय संबंधो का विकास।
2.) अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा प्राप्त करना।
3.) विदेशी भ्रमण के लिए।
4.) विभिन्न पक्षो में साहित्य वाचन हेतु।
5.) विभिन्न देशों की जानकारी प्राप्त करने के लिए।
6.) अलग - 2 देशों में व्यापार करने के लिए।

वैश्विक भाषा और स्थानीय भाषा की समझ हेतु पठन

भारत एक बहुभाषायी देश है। यहां सरकार के त्रि-भाषा सुत्र की स्थापना की है ताकि बालक :-

1.) अपनी मातृभाषा का ज्ञान प्राप्त कर सकें।
2.) स्थानीय भाषा का ज्ञान प्राप्त कर सकें।
3.) अंग्रेजी भाषा का ज्ञान अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में प्राप्त कर सके।

अंग्रजों के लंबे समय तक शासन करने के पश्चात

Scanned with CamScanner

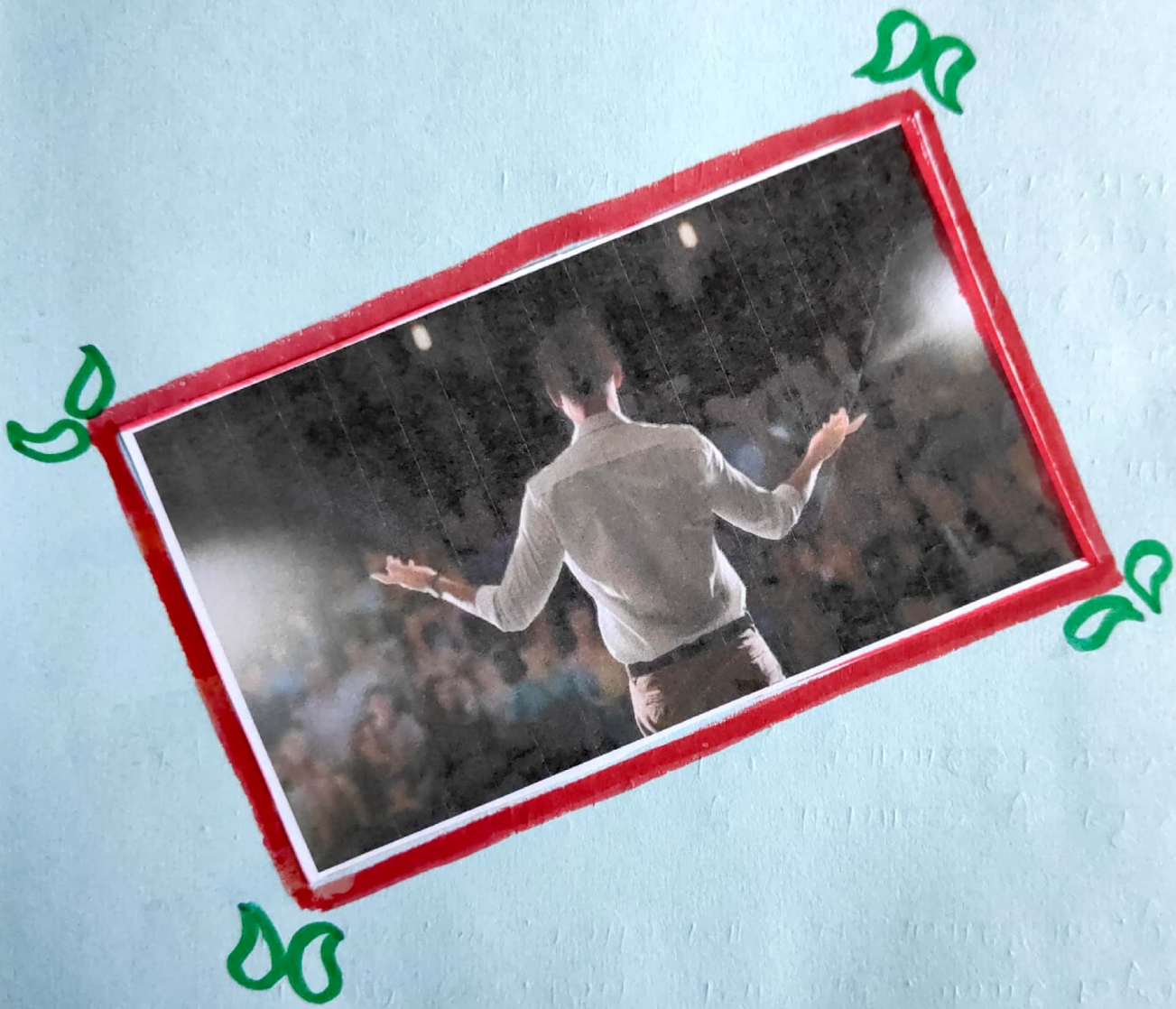

Scanned with CamScanner

भारत द्वारा अंग्रेजी को द्वितीय कार्यकारी भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया गया था। जबकि हिन्दी को मातृ-भाषा और राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्वीकार किया।

* स्थानीय भाषा के रूप में अनेक भाषाओं का प्रचलन है। अपनी मूलभाषा, स्थानीय भाषा का ज्ञान आवश्यक है। इतनी भाषाओं में यदि चर्चा होगी तो संप्रेषण संभव न हो सकेगा। इसलिए हिन्दी को सर्वमान्य भाषा का रूप दिया गया। दक्षिण भारत के लोगों द्वारा विरोध करने के कारण अंग्रेजी को कुछ समय तक कार्यकारी भाषा के रूप में स्वीकार किया गया। जो आज तक अपना स्थान बनाए हुए है। यही स्थिति वैश्विक भाषा की है। अंग्रेजों द्वारा अनेक देशों पर शासन किए जाने के कारण आज अंग्रेजी वैश्विक भाषा बन गई है।

* Reading a wide variety of text such as discriptive, narritive - conversations, bio-graphical sketches plays, poems, letters, screen-plays, reports, news reports :-

शिक्षण समाज में प्रभावी शिक्षण हेतु विद्यालय में विद्यार्थियों को तैयार किया जाता है।

Scanned with CamScanner

शिक्षण से शिक्षक प्रयास करते है – दुर्भाग्य कई विद्यार्थियों के पास पढ़ने की कुशलता नही है। आज आवश्यक है कि बालको को पठन योग्यता का विकास कराया जाए। पठन अधिग्रहण के विषय पर चर्चा करने के पश्चात बालक में विविध प्रकार के पठन अधिदक्षता का विकास कराया जाना चाहिए।

Scanned with CamScanner

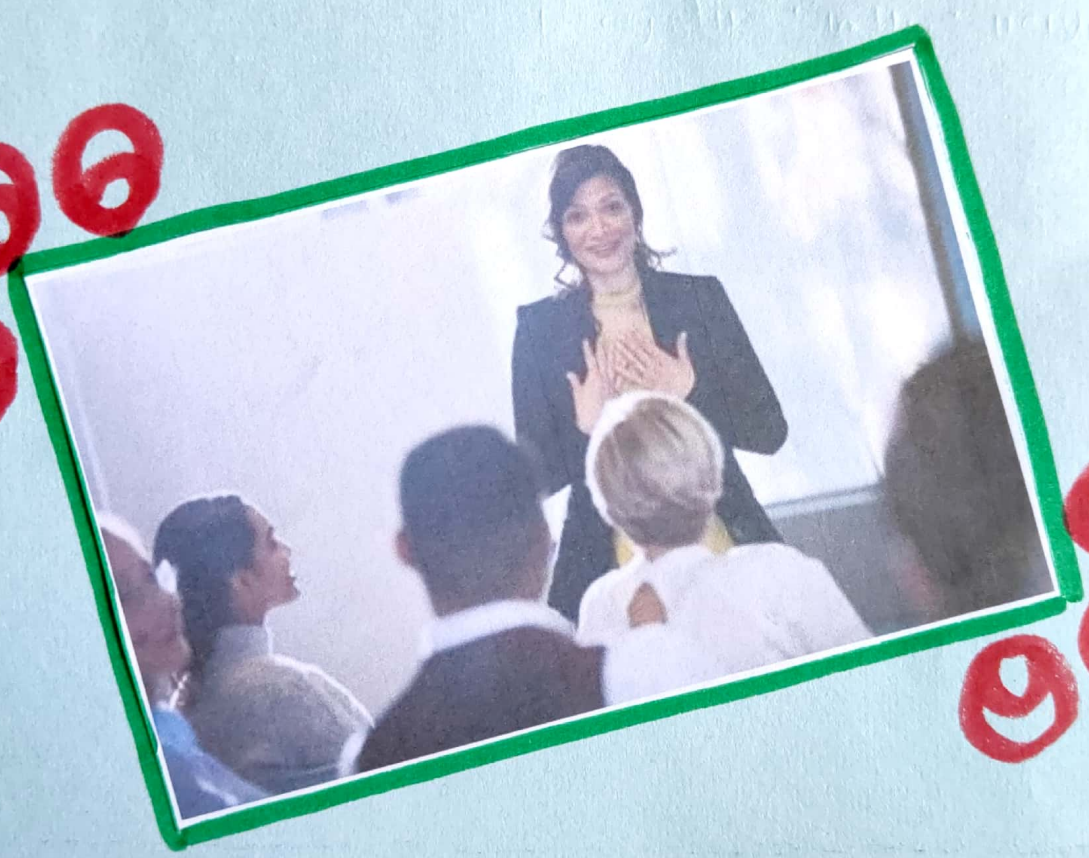

Scanned with CamScanner

वर्णात्मक अध्ययन

वर्णात्मक पठन से अभिप्राय है किसी घटना वस्तु, स्थान या अन्य विवरण की व्याख्या या विस्तार से वर्णन करना। अनुच्छेद पाठन के समक्ष एक स्पष्ट मानचित्र तैयार कर लेता है। उदाहरण के लिए लेखक यह स्पष्ट कर लेता है कि पेड़ सुन्दर है, तो वह स्पष्ट न कहकर कहेगा, एक मिनट रुको 'उस पेड़ का चित्र देखो'। यह स्पष्टीकरण उसे पेड़ की सुन्दरता दिखाने के लिए किया गया है। उसे पेड़ की सुन्दरता का चित्र मस्तिष्क में प्रतिबिम्बित कर देता है।

* विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि कोई वस्तु विशेष क्या है। लेखक अपने भावों की अभिव्यक्ति हेतु वर्णात्मक लेखन का प्रयोग करता है। इस प्रकार का वर्णन लेखक पाठकों का ध्यान घटना पर केन्द्रित करने हेतु दृश्य चित्रण के लिए अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए करते हैं।

1.) पाठ को पढ़ते समय मानसिक बिम्ब बना ले।
2.) पसंदीदा स्थान तैयार करना।
3.) अनुच्छेद को पढ़कर पाठ का अर्थ ग्रहण करना।
4.) पाठक को पढ़ने, दिखने, समझने और महसूस करने हेतु तैयार करना।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

कथा

कथा या कथन को पढ़ने की एक विशेष पद्धति होती है। जिसका प्रयोग दर्शको के समक्ष कथा को कहने के लिए प्रयोग किया जाता है। कथा विधा या प्रयोग या बोल या पढ़े जाने के लिए एक कर्मेन्द्री के रूप में व्यवत करते है। कथा कहने की तकनीकी का एक निश्चित सेट होता है।

दृश्य कथा बिन्दु परिवेक्षय

दृश्य कथा को पढ़ने के लिए व्यक्तिगत या गैर व्यक्तिगत प्रकार के जिसमें कथा के रूप में प्रस्तुत कीजाती हैं।

कथा आवाज

यह प्रस्तुतीकरण करने का ध्वनिमय माध्यम है। जिसमें कथा वाचन कथा का प्रस्तुतीकरण करता है।

कथा समय

कथा समय के अन्तर्गत कहानी का समय वर्तमान या भविष्य या अतीत के रूप में पढ़ा जाता हैं। इसके साथ स्थान का ध्यान रखा जाता है। कहानी किस देश काल और वातावरण को ध्यान मे रखकर लिखी गई हैं।

Scanned with CamScanner